







संपादकीय नक्सलवाद पर कब लगेगी नकेल.....

## जनादेश की गारंटी

सर्वोच्च न्यायालय ने लोक सभा सभा के प्रथम चरण के मतदान से एक दिन पहले चुनावी मशीन की विसनीयता के बारे में यही कहा। एडीआर और अन्य की तरफ से जारी जनहित याचिकाओं पर दूसरे दिन सुनवाई करते हुए ईलेक्ट्रिक वोटिंग मशीन पर संदेह जताने को सही नहीं बताया। इस पर फैसला अभी आना है। पर इन टिप्पणियों से ईवीएम पर न्यायालय के रुख का पता चलता है। स्वदेश निर्मित ईवीएम मशीन से चुनाव बीसर्वी सदी के नौवें दशक से ही कराया जा रहा है। इसके पहले, 1982 में केरल की परवूर विधानसभा उपचुनाव में उसे कुछ बूथों पर आजमाया गया था। इसकी खामियों को दुरु स्त कर इसे प्रयोग-सक्षम बनाया गया। ईवीएम के जरिए यूपी ने दो आम चुनाव जीते हैं और केंद्र में उनकी दो सरकारें बनी हैं। इसके पहले एनडीए की भी सरकार बनी है। विधानसभाओं और स्थानीय निकायों के चुनाव ईवीएम से ही हुए हैं। इसके बावजूद हरे हुए दल या गठबंधन हर आम चुनाव के बक ईवीएम को हटाने या उसे बीवीपीएटी से लैस करने की मांग चुनाव आयोग से लेकर सर्वोच्च न्यायालय तक करते रहे हैं। आयोग की तरफ से हर चुनाव के पहले उनके समक्ष ईवीएम के फूलफूल डेमो के जरिए चिंताओं के निराकरण के बावजूद सवाल उठाते रहना एक रस्मी कवायद है। उनका आरोप होता है कि इसमें डाले गए वोट भाजपा को मिलते हैं। पहले के कुछ उदाहरण इसकी तस्दीक भी करते थे पर यह तो मशीनी गड़बड़ी हो सकती थी। अब तो इसमें पर्यास सुधार किया गया है। तभी तो सर्वोच्च न्यायालय ने चार करोड़ टेस्टेड डेटा पर अपना भरोसा जताया है। यह सही भी है। ऐसा नहीं होता तो यूपीए ही लगातार जीतता होता या एनडीए का राज बदस्तूर रहता। दलों को चुनावों में इतना पैसा और पसीना नहीं बहाना पड़ता। ईवीएम अपने आका को तशरी में नहीं जो परोस देती। न्यायालय ने रस्मी याचियों से स्पष्ट कर दिया है कि बैलेट पेपर और बक्से की झीना-झपटी वाले प्रतिगामी चुनावी दौर में भारत जैसे 'महादेश' को नहीं लौटाया जा सकता। यह जर्मनी नहीं है। अलबत्ता, इस मसले पर फिर उंगली न उठे इस लिहाजन हर वोट का हिसाब रखने के लिए ईवीएम को बीवीपीएटी के साथ जोड़ने पर विचार किया जा सकता है। अंतिम परिणाम में देरी के बावजूद। चुनाव बिल्कुल शुद्ध-पवित्र तरीके से होना चाहिए।



मारे गए हैं। इस बीच 1002 आम नागरिकों की भी मौत हुई है। वहीं इन हमलों में 1222 जवान शहीद हो चुके हैं। छत्तीसगढ़ में नई सरकार के गठन के बाद नक्सलियों को आशंका थी कि सरकार उनके खिलाफ अभियान तेज करेगी और हुआ भी ऐसा ही। राज्य की नई सरकार ने शांति का प्रस्ताव भी सामने रखा था, लेकिन नक्सल नेताओं की तरफसे इस प्रस्ताव पर कोई सकारात्मक प्रतिक्रिया नहीं आई। वहीं दूसरी तरफ पुलिस और सुरक्षाबलों को बस्तर में प्री हैंड कर दिया गया है। ऐसे में पिछले तीन महीनों में नक्सलियों को कई बड़े नुकसान उठाने पड़े हैं। अब तक जहां माओवादियों के बटालियन स्तर के नेता ही ढेर हुए थे, तो इस बार शंकर राव जैसे डिवीजन लेवल का नेता पुलिस की गोली का शिकार हुआ है। ऐसे में नक्सली प्रदेश में पूरी तरह से बैकपुट मैं हैं। अब लगातार सवाल किए जा रहे हैं कि आखिर कब तक छत्तीसगढ़ को इस नक्सल दंश से छुटकारा मिल पाएगा और बस्तर में खून की होली थमेगी? सरकार, सुरक्षा बलों एवं स्थानीय लोगों की संयुक्त कोशिशों का परिणाम है कि पिछले एक दशक में वामपंथी अतिवाद संबंधी घटनाओं, मौतों और उनके भौगोलिक प्रसार में कापे कमी आई है। जहां वर्ष 2010 में वामपंथी अतिवाद से प्रभावित जिलों की संख्या 96 थी, वहीं वर्ष 2018 में प्रभावित जिलों की संख्या 60 रह गई है। वर्ष 2009 में जहां नक्सलवाद की घटनाओं और इन घटनाओं में मरने वालों की संख्या क्रमशः 2258 व 1005 थी, वहीं वर्ष 2018 में यह संख्या घटकर क्रमशः 833 एवं 240 रह गई। देश के जिन 8 राज्यों के लगभग 60 जिलों में यह समस्या बनी हुई है, उनमें ओडिशा के 5, झारखण्ड के 14, बिहार के 5, आंध्र प्रदेश और छत्तीसगढ़ के 10, मध्य प्रदेश के 8, महाराष्ट्र के 2 तथा बंगाल के 8 जिले शामिल हैं। वर्ष 2015 के बाद से नक्सलियों के 90 प्रतिशत हमले लगभग चार राज्यों- छत्तीसगढ़, झारखण्ड, बिहार और ओडिशा में हुए हैं। माओवादियों के थिंक टैंक और प्रथम पंक्ति के नेता या तो मारे जा चुके हैं या इस विचारधारा को छोड़ चुके हैं। भारत में नक्सली हिंसा की शुरुआत वर्ष 1967 में पश्चिम बंगाल में दार्जिलिंग जिले के नक्सलबाड़ी नामक गांव से हुई और इसीलिए इस उग्रपंथी आंदोलन को नक्सलवाद के नाम से जाना जाता है। जर्मनीदारों द्वारा छोटे किसानों के उत्पीड़न पर अकृष लगाने के लिए सत्ता के खिलाफ चारू मजूमदार, कानू सान्ध्याल और कहाई चर्टीज़ द्वारा

शुरू किए गए इस सशस्त्र आंदोलन को नक्सलवाद का नाम दिया गया। यह आंदोलन चीन के कम्युनिस्ट नेता माओ त्से तुंग की नीतियों का अनुगमी था। आंदोलनकारियों का मानना था कि भारतीय मज़बूरों और किसानों की दुर्दशा के लिए सरकारी नीतियां जिम्मेदार हैं। ये लोकतंत्र एवं लोकतांत्रिक संस्थाओं के खिलाफ हैं और जमीनी स्तर पर लोकतांत्रिक प्रक्रियाओं को खत्म करने के लिए हिंसा का सहारा लेते हैं। ये समूह देश के अल्प विकसित क्षेत्रों में विकासात्मक कार्यों में बाधा उत्पन्न करते हैं और लोगों को सरकार के प्रति भड़काने की कोशिश करते हैं। केंद्र और राज्य सरकारें माओवादी हिंसा को मुख्यतः कानून-व्यवस्था की समस्या मानती रही हैं, लेकिन इसके मूल में गंभीर सामाजिक-आर्थिक कारण भी रहे हैं। नक्सलियों का कहना है कि वे उन आदिवासियों और गरीबों के लिए लड़ रहे हैं, जिनकी सरकार ने दशकों से अनदेखी की है। वे जमीन के अधिकार एवं संसाधनों के वितरण के संघर्ष में स्थानीय सरोकारों का प्रतिनिधित्व करते हैं। माओवाद प्रभावित अधिकातर इलाके आदिवासी बहल हैं और यहां जीवनयापन की बुनियादी सुविधाएं तक उपलब्ध नहीं हैं, लेकिन इन इलाकों की प्राकृतिक संपदा के दोहन में सार्वजनिक एवं निजी क्षेत्र की कंपनियों ने कोई कमी नहीं छोड़ी है। यहां न सड़कें हैं, न पीने के लिए पानी की व्यवस्था, न शिक्षा एवं स्वास्थ्य संबंधी सुविधाएं और न ही रोजगार के अवसर। नक्सलवाद के उभार के आर्थिक कारण भी रहे हैं। नक्सली सरकार के विकास कार्यों के कार्यान्वयन में बाधा उत्पन्न करते हैं। वे आदिवासी क्षेत्रों का विकास नहीं होने देते और उन्हें सरकार के खिलाफ भड़काते हैं। वे लोगों से वसूली करते हैं एवं समांतर अदालतें लगाते हैं। प्रशासन तक पहुंच न हो पाने के कारण स्थानीय लोग नक्सलियों के अत्याचार का शिकार होते हैं। अशिक्षा और विकास कार्यों की उपेक्षा ने स्थानीय लोगों एवं नक्सलियों के बीच गठबंधन को मजबूत बनाया है। नक्सलवादियों की सफलता की वजह उन्हें स्थानीय स्तर पर मिलने वाला समर्थन रहा है।

# विचार

# जनता निष्ठ्य लेगी

आखलेश आयन्दे

ताजा सर्वेक्षण बताते हैं कि इस बार के आम चुनाव में बेरोजगारी, महंगाई और विकास प्रमुख मुद्दे के रूप में हावी रहने वाले

हैं। ये मुद्रे मतदाताओं के लिए अपना सांसद चुनने में काम में आएंगे। पिछले पांच साल में देश की हालत में कितना सुधार हुआ और जनता के कल्याण के लिए केंद्र और राज्य सरकारों ने जनता की बेहतरी के लिए कितनी जिम्मेदारी से कार्य किए, यह भी मतदाताओं पर असर डालेगा। इसी तरह 2019 में एनडीए सरकार ने किन घोषणाओं या वादों को पूरा किया और कौन-सी घोषणाएं एनडीए की केंद्र और राज्यों में उसकी सरकारें पूरा करने में नाकाम रहीं, इस बार के आम चुनाव में जनता द्वारा उन सारे मुद्रों पर गौर करके मतदान करने की बात ताजा सर्वेक्षण में सम्पन्न आई है। ताजा सर्वेक्षण के मुताबिक नौकरी और बेरोजगारी का मुद्रा लोगों के लिए सबसे अहम रहने वाला है। तामाम ऐसे लोगों की राय है कि अर्थव्यवस्था पर राज्य और केंद्र सरकार को सबसे ज्यादा गौर करने की जरूरत है क्योंकि गैर-बराबरी बढ़ी है। वर्हीं पर सर्वेक्षण में महिलाओं को रोजगार के अवसर कम होने की शिकायत भी है। बेरोजगारी के अलावा महाराई का मुद्रा सबसे अहम है। रोजमर्रा की वस्तुओं में बढ़ोत्तरी से भी आम लोगों में खासी नाराजगी है खासकर गरीब, ग्रामीण और मजदूरी करके परिवार पालने वाले मजदूरों में। निम्न मध्यम और मध्यम वर्ग की भी महाराई को लेकर सबसे ज्यादा शिकायत है। उज्ज्वला और मुफ्त राशन योजना से भारत का निम्न वर्ग राहत महसूस कर रहा है। गैरतलब है कि भाजपा के नये चुनाव घोषणापत्र में गरीबों को मुफ्त मानकर वहाँ से पर्यावरण संरक्षण की मुहिम शुरू कर दे, तो इस समस्या से काफी हद तक निजात पाई जा सकती है प्रकृति जीवन को व्यवस्थित करती है तथा सजीव परिदृश्यों से इसे सुंदर व आकर्षक बनाती है। इस क्रम में प्रकृति एक निर्धारित चक्र पर आगे बढ़ती है। हम अगर खुद को प्रकृति से छेड़छाड़ से दूर रख सके, तभी प्रकृति चक्र बेरोकटोक चलता रहेगा। जब व्यक्ति प्रकृति संग हस्तक्षेप करने पर उतारू हो जाता है, तो प्रकृति अपना सहज रूप परिवर्तित कर लेती है और ऐसे में जीवन असहज और दुखमय हो जाता है। मेरा आशय आज की प्रचलित पर्यावरण प्रदूषण की समस्या से है, जिसके प्रति आज प्रत्येक नागरिक वाकिफतों है, परंतु जीवन की जटिलताओं में आज के आधुनिक क्रियाकलापों में उलझकर वह बेबस सा हो गया है। इस बेबसी में आज व्यक्ति पर्यावरण के प्रति सार्थक सोच तो अवश्य रख रहा है, परंतु अपनी कार्यप्रणाली और क्रियाकलापों में बदलाव करना उसे कर्तव्य गंवारा नहीं। यही कारण है कि दिन-प्रतिदिन पर्यावरण की समस्या गंभीर से गंभीरतम होती जा रही है।

राशन का योजना का अगल पाच साल और बढ़ा दिया गया है। निश्चित ही इसका असर चुनाव परिणाम में दिखाई देगा क्योंकि 2019 में निम्न और माध्यम वर्ग ने केंद्र की मुफ्त राशन योजना को पसंद किया था। आयुष्मान योजना को विस्तार देते हुए गरीबों के अलावा सतर साल के बुजुगरे को भी इसका लाभ देने की बात जरूर नहीं है, इससे करोड़ों बुजुगरे को फायदा मिलेगा। इसी तरह पिछले पांच सालों में विकास की अहमियत को 48 प्रतिशत जनता ने स्वीकार किया। सबसे दिलचस्प राय भ्रष्टाचार को लेकर लोगों में देखने को मिली। महज 8 प्रतिशत लोगों ने भ्रष्टाचार को तबज्जो दी यानी 92 प्रतिशत लोगों ने भ्रष्टाचार को कोई खास तबज्जो ही नहीं दी, जबकि दस साल पहले भ्रष्टाचार सबसे गंभीर मुद्दा हुआ करता था। उस समय देश में बेरोजगारी की दर 5 प्रतिशत के आसपास थी, लेकिन अब यह 6.8 प्रतिशत के आसपास है। पिछले चुनाव में बेरोजगारी को लेकर लोग इतने आक्रामक नहीं थे जितने आज हैं। भाजपा के सामने सबसे बड़ी चुनौती बेरोजगारी, महाराष्ट्र और लगातार कीमतों में बढ़ोतारी है। महाराष्ट्र में कुछ कमी आई है, लेकिन पेट्रोलियम उत्पादों की कीमतों को भी व्यावहारिक बनाना होगा। इसी तरह करोड़ों गरीबों को शौचालय, सूर्य घर योजना से 300 यूनिट मुफ्त बिजली के अलावा स्टार्टअप के जरिए रोजगार देने की कवायद की गई। फिर भी नौकरी और बेरोजगारी का मुद्दा इस चुनाव में ढाग गया है, इसके पहले इस पर लोग इतने उग्र नहीं थे। इसलिए कोई भी गठबंधन सत्ता में आए उसके सामने करोड़ों युवाओं को रोजगार देने और महाराष्ट्र को कम और स्थिर बनाए रखने की चुनौती तो होगी ही। भाजपा का घोषणापत्र प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने जारी करते हुए कहा कि उन्हें यदि पांच साल और मिलते हैं तो वे भारत को दुनिया की तीसरी अर्थव्यवस्था बाला देश बनाने में कोई कसर नहीं छोड़ेंगे, लेकिन पिछले दस वर्षों में देश में कई स्तरों पर बदलाव आए हैं। करोड़ों नये युवा मतदाता इस बार के चुनाव में अपने मत का इस्तेमाल करेंगे। इनका भरोसा जीतना चुनौती ही है। वे रोजगार चाहते हैं, और देश को आगे बढ़ा हुआ भी देखना चाहते हैं। केंद्र में सरकार बनाने वाले गठबंधन को इन युवा मतदाओं की चाहत को हर हाल में पूरा करना ही होगा। इसी तरह महिलाएं भी सुरक्षा के साथ नौकरी भी चाहती हैं। वे आगे बढ़ा चाहती हैं और इसमें केंद्र सरकार से अपनी बेहतरी के लिए उम्मीद भी लगाए हुए हैं। इसलिए भाजपा नीत एनडीए गठबंधन और कांग्रेस का 'इंडिया' गठबंधन, दोनों ही महिलाओं के अर्थिक हालात मजबूत करने की बात अपनी चुनावी घोषणाओं में करते दिखते हैं। बेशक, देश की साख दुनिया में पहले से बेहतर हुई है। कशमीर मुद्दा भी एक झटके में हल कर लिया गया है। मुस्लिम महिलाओं को तीन तलाक जैसे जघन्य कानून को खत्म कर दिया गया।

# आज के ताजे खबरें

## कविता सिसोदिया

બધાન સિહે ઘરપાલ

ताजा सर्वेक्षण बताते हैं कि इस बार के आम चुनाव में बेरोजगारी, महंगाई और विकास प्रमुख मुद्दे के रूप में हावी रहने वाले हैं। ये मुद्दे मतदाताओं के लिए अपना सांसद चुनने में काम में आएंगे। पिछले पांच साल में देश की हालत में कितना सुधार हुआ और जनता के कल्याण के लिए केंद्र और राज्य सरकारों ने जनता की बेहतरी के लिए कितनी जिम्मेदारी से कार्य किए, यह भी मतदाताओं पर असर डालेगा। इसी तरह 2019 में एनडीए सरकार ने किन घोषणाओं या वादों को पूरा किया और कौन-सी घोषणाएं एनडीए की केंद्र और राज्यों में उसकी सरकारें पूरा करने में नाकाम रहीं, इस बार के आम चुनाव में जनता द्वारा उन सारे मुद्दों पर गौर करके मतदान करने की बात ताजा सर्वेक्षण में सामने आई है। ताजा सर्वेक्षण के मुताबिक नौकरी और बेरोजगारी का मुद्दा लोगों के लिए सबसे अहम रहने वाला है। तभाम ऐसे लोगों की राय है कि अर्थव्यवस्था पर राज्य और केंद्र सरकार को सबसे ज्यादा गौर करने की जरूरत है क्योंकि गैर-बराबरी बढ़ी है। वर्हीं पर सर्वेक्षण में महिलाओं को रोजगार के अवसर कम होने की शिकायत भी है। बेरोजगारी के अलावा महंगाई का मुद्दा सबसे अहम है। रोजर्मारी की वस्तुओं में बढ़ोत्तरी से भी आम लोगों में खासी नाराजगी है खासकर गरीब, ग्रामीण और मजदूरी करके परिवार पालने वाले मजदूरों में। निम्न मध्यम और मध्यम वर्ग की भी महंगाई को लेकर सबसे ज्यादा शिकायत है। उज्ज्वला और मुफ्त राशन योजना से भारत का निम्न वर्ग राहत महसूस कर रहा है। गौरतलब है कि भाजपा के नये चुनाव घोषणापत्र में गरीबों को मुफ्त

पर्यावरण प्रदूषण का समस्या से पवर्तन 1972 में ही अवगत हो गया था, जब संयुक्त राष्ट्र संघ ने स्टॉक होम, स्वीडन में विश्व भर के देशों का पहला पर्यावरण सम्मेलन आयोजित किया था। उस सम्मेलन में लगभग 119 देशों ने भाग लिया था और पहली बार एक ही पृथ्वी का सिद्धांत स्वीकार किया था। इसी सम्मेलन में संयुक्त राष्ट्र पर्यावरण कार्यक्रम का जन्म हुआ था तथा प्रति वर्ष पांच जून को पर्यावरण दिवस आयोजित करके आप जनमानस को प्रदूषण की समस्या से अवगत कराने का निश्चय किया गया। यह एक बहुत ही सुंदर प्रयास रहा, जिसकी वजह से अमुक दिन व्यक्ति पर्यावरण के प्रति गंभीरता से सोचने का प्रयत्न करता है। हम इस समस्या पर जब भी विचार करते हैं, तो प्रथमदृष्ट्यां बड़े उद्घोरणों व अन्य बड़ी परियोजनाओं को पर्यावरण की बिगड़ती हालत का एकमात्र कसूरवार मान लेते हैं। इस दोषारोपण की प्रक्रिया में हम यह भूल जाते हैं कि हम पर्यावरण को बचाने के लिए व्यक्तिगत रूप से कितने सजग व सक्रिय हैं। हमारा मानना है कि व्यक्ति अपने घर को केंद्र बिंदु मानकर यहीं से पर्यावरण संरक्षण की मुहिम शुरू कर दे, तो पर्यावरण प्रदूषण की समस्या से काफ़ी हद तक निजात पाई जा सकती है। हमारे घरों में प्रतिदिन कचरे का थोड़ा-बहुत हिस्सा घर की चौखट लांधा कर कूड़े के ढेरों के रूप में व्यवस्थित होता जाता है, जिसकी वजह से कूड़े-कचरे से हमारी गलियाँ

# अपने आंगन से शुरू हो स्वच्छता की मुहिम

બધાન સિહે ઘરપાલ

उद्यागों का पर्यावरण प्रदूषण को कसूरवार मानते हुए हम यह भूल जाते हैं कि हम पर्यावरण को बचाने के लिए व्यक्तिगत रूप से कितने सजग व सक्रिय हैं। व्यक्ति अगर अपने घर को केंद्र बिंदु मानकर वहाँ से पर्यावरण संरक्षण की मुहिम शुरू कर दे, तो इस समस्या से काफ़ी हद तक निजात पाई जा सकती है प्रकृति जीवन को व्यवस्थित करती है तथा सजीव परिदृश्यों से इसे सुंदर व आकर्षक बनाती है। इस क्रम में प्रकृति एक निर्धारित चक्र पर आगे बढ़ती है। हम अगर खुद को प्रकृति से छेड़छाड़ से दूर रख सकें, तभी प्रकृति चक्र बेरोकटोक चलता रहेगा। जब व्यक्ति प्रकृति संग हस्तक्षेप करने पर उतारू हो जाता है, तो प्रकृति अपना सहज रूप परिवर्तित कर लेती है और ऐसे में जीवन असहज और दुखमय हो जाता है। मेरा आशय आज की प्रचलित पर्यावरण प्रदूषण की समस्या से है, जिसके प्रति आज प्रत्येक नागरिक वाकिफ़तो है, परंतु जीवन की जटिलताओं में आज के आधुनिक क्रियाकलापों में उलझकर वह बेबस सा हो गया है। इस बेबसी में आज व्यक्ति पर्यावरण के प्रति सार्थक सोच तो अवश्य रख रहा है, परंतु अपनी कार्यप्रणाली और क्रियाकलापों में बदलाव करना उसे कठई गवारा नहीं। यही कारण है कि दिन-प्रतिदिन पर्यावरण की समस्या गंभीर से गंभीरतम होती जा रही है।

प्रदूषण फैलना शुरू हो जाता है। हम अपने घर को स्वच्छ रखने के लिए तो सचेत हैं, परंतु घर के बाहर की परवाह करना अपना दायित्व नहीं समझते। इसकी वजह से हम स्वयं अपने नगर और गांव को लापरवाही से गंदा करते जाते हैं और समस्या विकराल रूप धारण करती चली जाती है। सर्वप्रथम हमें अपने घर के कचरे को सही ढंग से निपटाने के लिए वचनबद्ध होना जरूरी है। इसके लिए हमें घरों में दो तरह के कचरे के डिब्बे प्रयोग में लाने की प्रक्रिया को देशव्यापी लहर में बदलना होगा। शहरों के साथ-साथ गांवों को भी इस प्रक्रिया का अहम हिस्सा बनने के लिए प्रेरित करना होगा कचरे के एक डिब्बे में उस कचरे को डालना चाहिए, जो जल्दी सड़ने-गलने वाला हो। इसमें सब्जियों के छिलके, सड़े फल व व्यर्थ भोजन को डालना चाहिए। ऐसे कचरे को आसानी से दबाकर निपटाया जा सकता है। दूसरे डिब्बे में लंबे समय में अपघिट होने वाले कचरे को डालना चाहिए, जैसे कागज, प्लास्टिक, कांच व लोहा आदि। इसमें जो कचरा कबाड़ी वाले को बेचने योग्य हो, उसे बेच देना चाहिए। इससे वे पुरानी वस्तुएं री-साइकिल सेंटर तक पहुंच कर नई उत्पयोगी वस्तु का रूप धारण कर सकें। इस तरह कचरे का निपटारा कर हम पर्यावरण को बचाने में घर से ही मुहिम चला सकते हैं। वर्तमान समय में ग्लोबल

# आज के युग में परिवार में संतुलन जरूरी

कावता ससादिया

हर बुजुर्ग के पास अपने कुछ ऐसे अनुभव और सीख होती हैं जो कि गूगल में भी नहीं मिलती। एकल परिवार में अंकेलेपन के शिकार बच्चे कई प्रकार की मानसिक विकृतियों का शिकार हो रहे हैं। बुजुर्ग अपने संघर्ष के बारे में जो बताते थे तो बच्चे प्रोत्साहित होते थे और विषम से विषम परिस्थितियों को संभालने की क्षमता रखते थे। पर आज छोटी-छोटी बातों पर आत्महत्या या दूसरों की हत्या एक आम बात हो चुकी है। बच्चे नशे के जाल में फँस कर जीवन बर्बाद कर रहे हैं परम पिता परमेश्वर ने जब सृष्टि की रचना की तो अपनी अलौकिक शक्ति व दिव्य दृष्टि से प्रत्येक कमी को जांचा-परखा और प्राणियों में एक ऐसा संतुलन बनाया जिससे सभी प्रकार के प्राणी एक-दूसरे के पूरक बनकर आनंदमय जीवन व्यतीत कर सकें। मनुष्य समाज की इकाई बना। मानव से परिवार और परिवार से समाज की स्थापना हुई। मानव समाज के लिए परिवार न केवल आवश्यक है, अपितु एक सुरक्षित एवं आदर्श संस्था भी है। पर विगत कुछ वर्षों में इस संस्था की जड़ें कुछ हिलने लगी हैं। रचयिता ने जब अविकसित बचपन, पूर्ण विकसित युवावस्था और जीर्ण-शीर्ण वृद्धावस्था की तस्वीर बनाई तो उन्हें लगा कि बच्चे तो नन्हे-मुन्हे से प्यारे-प्यारे कोमल खिलौने उनके मां-बाप और अन्य सभी के आकर्षण का केंद्र बने रहेंगे। उनके अविकसित तन और नादान मन को विकसित होने में सभी प्यार से सहयोग करेंगे। पर जब बचपन के बाद जवानी और बुढ़ापा आया तो उन्हें लगा कि जवानी तो स्वयं ही फैलाद होगी जो सबको संभालेगी पर बुढ़ापा कुरुप, निर्बल, मृत्यु की कगार पर डगमगाता सा एक पेड़ जिसके सभी पते और शाखाएं थक कर और सूख कर गिरने वाले होंगे, उसे भी सहारा चाहिए। तो वृद्धावस्था को सुरक्षित रखने के लिए बचपन और बुढ़ापे में एक संतुलन बनाया गया। अंत में

A silhouette of a family of four standing on a beach at sunset. A man on the left holds one end of a long banner that stretches across the frame. A woman on the right holds the other end. In the center, a young girl stands with her arms raised, and a young boy stands next to her, also with his arms raised. The word "FAMILY" is printed in large, bold, red letters across the banner. The background is a bright, golden sunset over the ocean.

वैसे भी बृद्धों के मन बच्चों की तरह हो जाते हैं और वे घर में रहकर बच्चों को संभाल सकते हैं, क्योंकि बच्चे कोमल और वृद्ध निर्बल होते हैं। परिवार में बुजुर्गों को सम्मान दिया गया। बच्चों के माता-पिता बुजुर्गों का सम्मान करते और बुजुर्ग अपने अनुभवों और ज्ञान को साझा कर अगली पीढ़ी को जीना और कार्य करना सिखाते थे। नई पीढ़ी भी उनकी सेवा और आज्ञापालन करना अपना कर्तव्य समझती थी और बच्चों को भी यह सिखाया जाता था। मां-बाप अपने बच्चों को बुजुर्गों के पास सौंप कर निश्चित होकर घर अंदर-बाहर के कार्य करने निकल पड़ते थे। पहाड़ी भाषा में एक कहावत है कि मूल से प्यारा ब्याज होता है क्योंकि बुजुर्गों को नाती-पोते अपने बच्चों से अधिक प्यारे होते हैं। जब मां-बाप बच्चों की शारातों पर पिटाई करने लगते तो बच्चे दादी-नाना की गोद में छिप जाते हैं और दादा-दादी बच्चों को मारने वाले मां-बाप को पिटाई करने से रोकते और ढांटते। इस प्रकार बच्चे बुजुर्गों के साथ मिलकर खूब आनंद और मस्ती करते तथा बुजुर्ग भी बच्चों के साथ बच्चे ही बन जाते हैं और अपनी मनपसंद खानपान की चीजें चोरी-छोपे बच्चों के साथ खूब चटकाते भरकर खाते। बच्चे अपनी

दादी-नानी से रामायण, महाभारत, परियों की कहनियां, पहेलियां बड़े शौक-प्यार से मुनते थे। बच्चों में बचपन से ही संयुक्त परिवार में रहकर बड़ों का सम्मान और छोटे से प्यार करने की भावना का विकास होता था। उनमें मिल-जुलकर बांट कर खाने की भावना और सहनशीलता होती। इस प्रकार आयु की रेल पर जीवन रूपी यात्रा वृद्ध रूपी गार्ड के संचालन में बचपन, किशोरावस्था, यौवनावस्था और वृद्धावस्था रूपी स्टेशनों को पार करती हुई मृत्यु रूपी निश्चित स्टेशन पर बड़े आराम से पहुंच जाती थी। पर आज के इस भौतिकवादी युग में बच्चों का बचपन वीडियो गेम्स में खो गया है और उन्हें सिखाया जाता है कि मिट्टी से हाथ -पैर गंदे हो जाते हैं। आज पढ़े-लिखे बुजुर्गों को भी दरकिनार कर दिया जाता है, क्योंकि वे नए जमाने का ज्ञान नहीं रखते। बच्चे एक ऐसे परिवार में रहते हैं जहाँ न दादा-दादी हैं, न चाचा-तात्या या परिवार के अन्य सदस्य। आगर किसी परिवार में बुजुर्ग हैं भी तो वे किसी के भी पास उनके साथ बैठने के लिए समय नहीं है। बच्चों को उनके पास बैठने से मां-बाप मना करते हैं कि वृद्ध उन्हें आधुनिक बातें नहीं सीखा पाएंगे और हमारे बच्चे पिछड़ जाएंगे। उनके मां-बाप भी वृद्धों को

यहां कहकर चुप करा देते हैं कि आपको आधुनिक ज्ञान नहीं है। हमें आपसे ज्यादा ज्ञान है। जैसे रथ में पढ़े पुराने सामान को कबाड़ी को बेच दिया जाता है, ऐसे ही वृद्धों को वृद्धाश्रमों में छोड़ा जा रहा है, जहां वे अपने परिवार के लिए खुन के आसुं रोते हैं। यहां तक कि उनके क्रिया-कर्म को भी उनकी संतान के पास समय नहीं है। यौवन के नशे में चूर उनकी संतानें यह क्यों नहीं समझती कि ये बृद्ध भी कभी उनकी तरह बलशाली जवान थे, पर जवानी में फैलाद सा शरीर एक दिन बुढ़ापें की जंग लगकर जर्जर हो जाएगा, तब उन्हें भी सहारे की आवश्यकता होगी। इस बात को भी क्यों नहीं सोच पाते कि हम भी कभी बुजुर्ग होंगे, तब हमारे बच्चे भी हमारा अनुकरण करते हुए हमारे साथ भी वही व्यवहार करेंगे जो हमने अपने बुजुर्गों के साथ किया है। हर बुजुर्ग के पास अपने कुछ ऐसे अनुभव और सीख होती है जो कि गूगल में भी नहीं मिलती। एकल परिवार में अकेलेपन के शिकार बच्चे कई प्रकार की मानसिक विकृतियों का शिकार हो रहे हैं। बुजुर्ग अपने संघर्ष के बारे में जो बताते थे तो बच्चे प्रोत्साहित होते थे और विषम से विषम परिस्थितियों को संभालने की क्षमता रखते थे। पर आज छोटी-छोटी बातों पर आत्महत्या या दूसरों की हत्या एक आम बात हो चुकी है। बच्चे कई प्रकार के नशे के जाल में फँस कर अपना जीवन बर्बाद कर रहे हैं। जैसे कि बूढ़े से बूढ़े पुराने तरु भी छाया और फल देते हैं, वैसे ही बुजुर्गों के पास भी घार, आशीर्वाद, जीवन के अनुभवों का अमूल्य खजाना होता है। तो क्यों न आधुनिकता और सोशल मीडिया के भीड़ भेरे बाजार में बिखरती बचपन की कोमल शाखाओं को वृद्धों की छत्रछाया में रखकर, उनके घ्यार के सागर से सर्वोच्चकर उनके सर्वांगीण विकास के साथ एक बलशाली तन-मन, मस्तिष्क के साथ राम, लक्ष्मण, अर्जुन, युधिष्ठिर जैसी बहादुर पीढ़ी का अवतरण किया जाए, जिनके संस्कारों की छत्रछाया में न जाने कितने लोगों को आश्रय देने की क्षमता हो।





### व्यापार समाचार

जोमेटो को मिला जीएसटी डिमांड नोटिस  
11.81 करोड़ भरने का आदेश

नई दिल्ली(एजेंसी)। अॉनलाइन फूड डिलीवरी प्लेटफॉर्म जोमेटो को बस्तु एवं सेवा कर (जीएसटी) डिमांड नोटिस मिला है। कंपनी को जुमानी समेत 11.81 करोड़ रुपये का टैक्स भरने को कहा गया है। कंपनी को नोटिस में जो आदेश दिया गया है उसमें, जुलाई 2017-मार्च 2021 की अधिकता के लिए 5.9 करोड़ रुपये की जीएसटी डिमांड और 5.9 करोड़ रुपये का जुमाना शामिल है। जोमेटो ने स्टॉक एक्सचेंज नियामक फाइलिंग में कहा, कंपनी को जुलाई 2017 से मार्च 2021 की अधिकता के लिए गुरुग्राम स्थित केंद्रीय बस्तु एवं सेवा कर के एडिशनल कमिशन की ओर से एक आदेश प्राप्त हुआ है, जिसमें 5,90,44,889 रुपये के जुमानी के साथ 5,90,44,889 की जीएसटी पांग की गई है। इस महीने की शुरुआत में, जोमेटो ने कहा था कि उसे 2018 में जीएसटी के 4.2 करोड़ रुपये के शार्ट पेमेंट पर दिल्ली और कर्नाटक के टैक्स अधिकारियों से नोटिस मिला है। कंपनी ने कहा था कि वह टैक्स डिमांड नोटिस के खिलाफ अपील करेगी। पिछले वित्तीय वर्ष की तीसरी तिमाही में जोमेटो ने 125 करोड़ रुपये का मुनाफा दर्ज किया, जो पिछले साल की समान तिमाही की तुलना में 390 करोड़ रुपये का सुधार है।

### एचडीएफसी बैंक का शुद्ध मुनाफा 34 प्रतिशत बढ़ा

नई दिल्ली(एजेंसी)। निजी क्षेत्र के सबसे बड़े ऋणदाता एचडीएफसी बैंक का एकल शुद्ध मुनाफा मार्च को समाप्त तिमाही में सालाना आधार पर 37.1 प्रतिशत बढ़कर 16,512 करोड़ रुपये पर पहुंच गया। तिमाही के दौरान इसकी शुद्ध ब्याज आय (एचडीएफसी) 24.75 बड़कर 29,077 करोड़ रुपये हो गई। अपने तिमाही नंबरों की घोषणा करते हुए, एचडीएफसी बैंक ने स्लूट्यून 24 के प्रति शेराव 19.5 का लाभांश भी घोषित किया। निजी क्षेत्र के ऋणदाता का कोर नेट इंटरेस्ट मार्जिन कुल संपत्ति पर 3.44लॉ और ब्याज अर्निंग असेट के आधार पर 3.63लॉ रहा। एचडीएफसी बैंक ने अपनी फाइलिंग में कहा कि अर्थव्यवस्था में त्रांगों का माहौल बेहतर बना हुआ है। बैंक का सभी क्षेत्रों में क्रेडिट प्रदर्शन स्वस्थ बना हुआ है। पिछले तिमाही की तुलना में जीएनएम 1.24लॉ का सुधार हुआ है। बैंक की ओर से जारी आकड़ों के अनुसार उसका नेट एनपीए नेट एडवांस का 0.33लॉ रहा जो एक साल पहले 0.27लॉ एवं दिसंबर तिमाही में 0.31लॉ था। बैंक रिटर्न आॅन असेट्स यारी आरएओ 0.49लॉ रहा जो दिसंबर तिमाही में भी इतना ही था। वही, एक साल पहले यह 0.53लॉ था। अंकें जारी करने के साथ एचडीएफसी बैंक के बोर्ड ने एक रुपये के केंस वैल्यू पर 1950 फैसलों यारी 19.5 रुपये प्रति शेराव डिविडेंड देने का भी ऐलान किया है। इसके लिए 10 मई को रिकॉर्ड डेट तय किया गया है। एजीएम की बैंक में इसपर मुहर लाने के बाद इसे निवेशकों को जारी कर दिया जाएगा। बैंक ने इससे पहले वित्तीय वर्ष 2023 में 19 रुपए का लाभांश दिया था।

### एयरटेल ने पेश किया दुनिया धूमने वाले ग्राहकों के लिए किफायती इंटरनेशनल रोमिंग पैक

नई दिल्ली(एजेंसी)। भारत के प्रमुख टेलीकम सर्विस प्रोवाइडर्स में से एक, भारतीय एयरटेल (एयरटेल) ने आज विदेश यात्रा करने वाले ग्राहकों के लिए किफायती अंतर्राष्ट्रीय रोमिंग पैक पेश किए हैं। नए पैक में 184 देशों तक पहुंच रोमिंग में कहाँ भी बिना के अधिकतम 184 देशों तक पहुंच रोमिंग पैक के लिए प्रति दिन 1.33 प्रतिदिन से शुरू होता है, जो इहें विदेशों में मिलने वाले लोकल सिम की तुलना में भी इतना ही था। वही, एक साल पहले यह 0.53लॉ था। अंकें जारी करने के साथ एचडीएफसी बैंक के बोर्ड ने एक रुपये के केंस वैल्यू पर 1950 फैसलों यारी 19.5 रुपये प्रति शेराव डिविडेंड देने का भी ऐलान किया है। इसके लिए 10 मई को रिकॉर्ड डेट तय किया गया है। एजीएम की बैंक में इसपर मुहर लाने के बाद इसे निवेशकों को जारी कर दिया जाएगा। बैंक ने इससे पहले वित्तीय वर्ष 2023 में 19 रुपए का लाभांश दिया था।

### रुपया ही नहीं अन्य करेंसी भी... वित्त मंत्री निर्मला सीतारमण ने बताया रुपये की कमज़ोरी का कारण

नई दिल्ली(एजेंसी)। डॉलर के मुकाबले भारतीय रुपये में गिरवट के बारे में पूछे जाने पर केंद्रीय वित्त मंत्री निर्मला सीतारमण ने अपनी प्रतिक्रिया दी है। गुजरात के अहमदाबाद में एक सावल के जवाब में उन्होंने कहा कि जब अमेरिकी अर्थव्यवस्था और डॉलर की स्थिति मजबूत होती है, तो उसके मुकाबले रुपये में ऊरां-चढ़ाव आता है। वित्त मंत्री ने कहा, इसके विपरीत, येन और यूरो के मुकाबले रुपये; हमारी अर्थिक स्थिति, विदेशी मुद्रा भंडार, मुद्रास्फीति, और अर्थिक मजबूती को देखते हुए स्थिर बना हुआ है। उन्होंने कहा कि अमेरिकी डॉलर के मुकाबले, न सिफर रुपया बल्कि अन्य मुद्राओं में ऊरां-चढ़ाव और अर्थिक है। वैश्व वित्तीय राशि में अनिश्चितता बढ़ रही है। इरान और इसाइल के बीच तनाव बढ़ने से पश्चिम एशिया में चुनौतीपूर्ण हालात बने हैं। यही वह क्षेत्र है जहाँ से सिर्फ हमारी ही नहीं पूरी दुनिया का क्रॉल ऑयल निकलता है, इससे ग्लोबल इकोनॉमी में ऊरां-चढ़ाव बढ़ा है। भारत को विनिर्माण और सेवा क्षेत्र के लिए आकर्षक गतिव्य बनाने की हो रही है।

## खेल-व्यापार

रायपुर मंगलवार 23 अप्रैल 2024

### 8 अंक के साथ नेपोमनियाच्ची, नाकामूरा और कारुआना भी दौड़ में कायम

टोरंटो(एजेंसी)। दुनिया के दिग्गज ग्रैंडमास्टरों के बीच 64 खानों की जंग में शनिवार को युवा भारतीय ग्रैंडमास्टर डी युकेश ने शानदार जीत से एकल बढ़त हासिल कर ली। वहाँ खेले जा रहे कैंडिडेट्स शतरंग टूर्नामेंट के 13वें दौर में उन्होंने फास के फिरोजा अलीरोजा को 40 चालों में शिकस्त दे दी। बस एक दौर बचा = इस तरह युकेश अब तक के सबसे कम उम्र के विश्व चौथीपन्थिपत्र दावेदार बनने की कोशिश में जुटे हैं। अब टूर्नामेंट में बस एक दौर बचा है। चेन्नई के 17 वर्षीय युकेश अगर कैंडिडेट्स में विजेता बतते हैं तो विश्व चौथीपन्थिपत्र के खिताब के लिए उनकी भिंडूत चीन के डिंग लिरेन



से होगी। युकेश का समाना अब अंतिम दौर में अमेरिका के हिकारू नाकामूरा से होगा जबकि अमेरिका में जुटे हैं। अब टूर्नामेंट में बस एक दौर बचा है। चेन्नई के 17 वर्षीय युकेश अगर कैंडिडेट्स में विजेता बतते हैं तो विश्व चौथीपन्थिपत्र के खिताब के लिए उनकी भिंडूत चीन के डिंग लिरेन

कारुआना की भिंडूत रूस के इयान नेपोमनियाच्ची से होगी। चारों जीत के दावेदार = हालांकि चार खिलाड़ियों में से कोई भी

इस प्रतियोगिता को जीत सकता है, लेकिन संभावनाएं काफी हैं। उनके

तक युकेश के पक्ष में हैं। उनके 8.5 अंक हैं और महज ड्रॉ खेला।

उहें खिताब दिला सकता है। लेकिन बाकी तीनों के 8-8 अंक हैं, ऐसे में यह दौर बहुत रोमांचक होने की उम्मीद है। शनिवार को युकेश की संयोग से खेलने का लाभ मिला और उहोंने मुश्किल स्थिति में अलीरोजा की अंत में की गई भूल का फायदा उठाया। नेपोमनियाच्ची और नाकामूरा ने ड्रॉ खेला। आर प्राज्ञनंदां और वैशाली ने युकेश की एकलतम प्रतिक्रिया के बारे में लोरी बनाई हुई है। और हमवतन लेरी टिंजी पर धोये एक अंक की बहुत बनाई हुई है। बुलायिया की नूरायुल सालिमोवा ने रूस की कैरोना लाने से बाजी ड्रॉ कराकर अंक बांटे। लेरी 7.5 अंक लेकर दूसरे

वैशाली की लगातार चौथी जीत है। महिलाओं की स्पर्धा में आर, वैशाली ने लैई टिंजी को कोनेरू रोमांचक होने की उम्मीद है। शनिवार को युकेश की चौथी जीत में आर, वैशाली ने लैई टिंजी को ले रखा। वैशाली ने युकेश की एकलतम प्रतिक्रिया के बारे में लोरी बनाई है। आर प्राज्ञनंदां और वैशाली ने युकेश की एकलतम प्रतिक्रिया के बारे में लोरी बनाई है। और वैशाली ने युकेश की एकलतम प्रतिक्रिया के बारे में लोरी बनाई है। बुलायिया की नूरायुल सालिमोवा ने रूस की कैरोना लाने से बाजी ड्रॉ कराकर अंक बांटे। लेरी 7.5 अंक लेकर दूसरे

### खेल : हॉकी : ओलंपिक से पहले शिविर अपनी कमियां दूर करेगी हॉकी टीम



नई दिल्ली(एजेंसी)। पेरिस ओलंपिक से पहले कमियों को दूर करने के लिए एक दौर रखते हैं। शिविर के बाद टीम एफआईएच प्रॉ लीग के अंतर्गत बेल्जियम और लंदन की यात्रा करेंगी जो 22 मई से नौ जून तक होगी। इसमें उसका अधिकारी अर्जेंटीना, बेल्जियम, जर्मनी और त्रिनियन से होगा। मुख्य कोच क्रेग फूटोन ने कहा, हम शिविर में ट्रेनिंग का महत्वपूर्ण चरण शुरू करना चाहते हैं। हमें सुनिश्चित करने की जरूरत है कि ओलंपिक से पहले हम सर्वश्रेष्ठ फॉर्म में हों। हमारे पास कुछ युवा खिलाड़ियों के साथ अनुभवी खिलाड़ियों का अच्छा ग्रूप है। ऑट्रेलिया ने एक दौर रखते हैं। मुख्य कोच क्रेग फूटोन ने कहा, हम शिविर में ट्रेनिंग का महत्वपूर्ण चरण शुरू करना चाहते हैं। हमें सुन

